उच्च उत्पादकता के लिए उर्वरक संतुलन जरूरी

उर्वरक विशेषांक पर श्रीराम कंसोलिडेटेड (डीएससीएल) लिमिटेड कंपनी के अध्यक्ष व वरिष्ठ प्रबंध निदेशक श्री अजय श्रीराम से कृषि टुडे ने वार्ता की। प्रस्तुत हैं इस वार्ता के कुछ अंश -

अजय श्रीराम

कृपया हमें अपनी कंपनी और उत्पाद के बारे में बताइए ?

डीसीएम श्रीराम कंसोलिडेटेड (डीएससीएल) लिमिटेड, का 3523 करोड़ रुपए का कारोबार है। हमारे कृषि व्यापार में चीनी, यूरिया, कृषि आदान, हाइब्रिड बीज और हरियाली किसान बाजार हैं। कंपनी गहन ऊर्जा तथा मूल्य वर्द्धित व्यापार में भी उतरी है। कपनी की विनिर्माण सुविधाएं कोटा (राजस्थान) भरूच (गुजरात), अजबपुर, रूपपुर, हरिद्वार तथा लोनी (उत्तर प्रदेश) में हैं। संकर बीज के लिए कार्य हैदराबाद (भारत), वियतनाम, फिलीपींस और थाईलैंड में हो रहा है। भिवाड़ी, बंगलौर, मुंबई, हैदराबाद और चेन्नई में भी हमारी विनिनर्माण इकाइयां हैं।

भारत में उर्वरक उद्योग की वर्तमान स्थिति के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

मैं उस भारत के बारे में सोचता हूं, जहां की 65 प्रतिशत जनता ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और उनमें से 50 प्रतिशत लोग कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। कृषि क्षेत्र में उत्पादन तथा आजीविका में वृद्धि के लिए इससे जुड़े लोगों की बहुत बड़ी भूमिका है। कृषि केवल अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा ही नहीं, बल्कि देश की सामाजिक स्थिरता भी इससे जुड़ी हुई है। आज प्रौद्योगिकी पर सारी दुनिया की नजर लगी हुई है। हम इसकी सहायता से कई मुद्दों जैंसे उत्पादकता व पैदावार में सुधार, गुणवत्ता और फसल कटाई के बाद की गतिविधियां और रोपण से पहले की प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी की मदद से किसानों की सहायता कर सकते हैं। लेकिन इस पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। किसानों के साथ बहुत सारा ज्ञान साझा करने की जरूरत है, ताकि उन्हें किसान प्रति हेक्टेयर के हिसाब से लाभ मिल सके। उर्वरक फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसके लिए किसानों को जागरूक होने की जरूरत है, उनकी उपज और उत्पादकता वृद्धि हो ताकि उनकी आय में वृद्धि में हो सके।

उर्वरकों में मौजूदा सब्सिडी, इस सम्बध में आपकी सरकार से उम्मीदे तथा आगामी वर्ष के लिए इस क्षेत्र में सब्सिडी और नीति कार्यक्रमों के बारे में आपकी टिप्पणी ?

छह महीने पहले फास्फोरस और पोटाश पर एक पोषक तत्व आधारित योजना जारी की गई थी। यह देखना जरूरी है कि इस उद्योग में कैसे उछाल आता है। कैसे डीएपी की कीमत अचानक 500 डॉलर से 700 डॉलर के स्तर को छू जाती हैं। मैं समझता हूं कि यह सब एक बहुत ही सकारात्मक दिशा में जा रहा है। देर से सही, सरकार यूरिया के लिए एक दीर्घकालिक नीति भी बना रही है।

किसानों तक पहुंच बनाने के लिए आपनी विस्तार सेवाओं के बारे में बताएं ?

मुझे लगता है कि उर्वरक उद्योग बहुत अच्छी तरह किसानों को तकनीकी ज्ञान व अन्य जानकरी देता आया है। उदाहरण के लिए हमारी कंपनी उर्वरक उद्योग के अलावा चीनी, हरियाली किसान बाजार, बीज व्यवसाय में भी कार्यरत हैं। उर्वरक क्षेत्र में विस्तार करने की अपार क्षमता है। उदाहरण के लिए हम यूरिया निर्माण करते हैं लेकिन इसी के साथ हम का डीएपी, एसएसपी, एमओपी का आयात करते हैं। हम घुलनशील उर्वरक का विनिर्माण करते हैं। हमारे 10,000 खुदरा विक्रेता किसानों के सीधे सम्पर्क में हैं। भारत में अधिकतर ऐसे किसान हैं, जिनके पास 2 हेक्टेयर से कम जमीन है। किसानों की इस बड़ी संख्या तक पहुंचना एक बहुत बड़ी चुनौती है। हां, इन किसानों के लिए निजी क्षेत्र ही सरकार से बेहतर काम कर सकता है।

भारत में उर्वरक क्षेत्र के विकास, मुद्दे एवं चिंता के विषयों के बारे में बताइए ?

अगर सरकार बहुत कम सब्सिडी देती है तो, किसान उपज की लागत का भुगतान नहीं करते और इस तरह उद्योग प्रगति नहीं कर सकते। इन तीनो में संतुलन होना चाहिए। पिछले 10-15 वर्षों से देश में उर्वरक उद्योग में कोई विकास नहीं हुआ। हम उर्वरकों का आयात करने लगे। बाहरी कंपनियों को इसका खूब लाभ मिला। वहीं भारतीय उर्वरक कंपनियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। पिछले 6-7 वर्षों में यूरिया आयात 5 लाख टन से बढ़कर 7 करोड़ टन हो गया। यह 2-3 फीसदी की दर से हर साल बढ़ रहा है।

भारत में उर्वरक उपयोग क्षमता क्या है। इसकी स्थिति में सुधार के लिए क्या करना चाहिए ?

किसानों को इस विषय के बारे में जानकारी व ज्ञान मुहैय्या कराना होगा और उर्वरक उद्योग यह काम कर रहा है। जब खेत में खाद डाली जाती है, तो समय समय पर पानी की विशेष मात्रा भी

दी जाती है। कई राज्यों में पानी की अधिकता के कारण खाद मिट्टी में गहरे तक चली जाती है और पौधे उसे ग्रहण नहीं कर पाते हैं। अनुमान है कि 50-60 प्रतिशत यूरिया इसी तरह से बह जाता है। मैं समझता हूं कि नीतियों में बदलाव कर उर्वरक उपयोग क्षमता में सुधार की दिशा पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उर्वरकों का इस्तेमाल सही तरीके से हो, इसके लिए हमें नई मशीन और प्रौद्योगिकियों खोजना होगा।

वाकई उर्वरक उद्योग नए उत्पाद और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर ध्यान दे रहा है?

सही बात यह है कि पिछले कुछ वर्षों से अभिनव सोच में कमी आई है। दो- एक साल से बोरोनेटेट यूरिया, जिंकेट यूरिया, नीम लेपित यूरिया जरूर आ रहा है। सरकार ने भी इसको मंजूरी दे दी है। मैं समझता हूं कि नई नीतियों के आने से फास्फोरस और पोटाश की कीमतों में विकेंद्रीकरण आया है। इससे बाजार में मूल्य निर्धारण में लचीलापन आएगा, जिससे उद्योग किसानों के लाभ के लिए बेहतर उत्पाद प्रदान कर सकेगा। वर्तमान में यूरिया नीति भी चर्चा में है। हमें आशा है कि एक नई नीति जल्दी ही हमारे पास होगी। गन्ना बोने साथ-साथ उर्वरक डालने की मशीनें विकसित की गई हैं। इनकी सहायता से बेहतर तरीके से गन्ना बोया जा सकता है और खाद को डाला जा सकता है।

एक तरफ तो हम खाद्य सुरक्षा की बात करते हैं और दूसरी तरफ उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मृदा की उर्वरत क्षमता कम होती जा रही है?

यहां दो समस्याएं हैं। एक तो यह कि हम जब हम उचित समयावधि पर उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। इससे होता यह है कि पौधे मिट्टी से बचे-खुचे पोषक तत्वों को अवशोषित कर लेते हैं और नई फसल के लिए पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं। प्रत्येक फसल के लिए सूक्ष्म पोषक तत्व महत्वपूर्ण हैं। हम अधिकतर नाइट्रोजन फास्फोरस और पोटेशियम की बात करते हैं, लेकिन इसके अलावा अन्य पच्चीस सूक्ष्म पोषक तत्वों को हमें नहीं भूलना चाहिए जो मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और अंत में उत्पादकता बढ़ाने का कार्य करते हैं। मुझे लगता है कि मृदा स्वास्थ और उच्च उत्पादकता के लिए उर्वरकों का संतुलित उपयोग अत्यधिक जरूरी है।

क्या आपकी कंपनी सरकार या राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ भी मिलकर कार्य कर रही है?

जी हां, हमने एनसीएर, सीएसआईआर और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के साथ काम किया है। हम 10,000 खुदरा विक्रेताओं के माध्यम से भी किसानों से जुड़े हुए हैं। हमारे पास श्रीराम कृषि विकास केन्द्र है, जिनमें हमारे कृषिविज्ञानी काम कर रहे हैं। एक कृषि विज्ञानी 7-8 गांवों के लिए काम करता है। उसका कार्य किसानों को कृषि कार्य हेतु सलाह देना है कि कैसे उत्पादकता और उपज को बढ़ाया जा सके। हमारी यह रणनीति बहुत ही सकारात्मक ढ़ंग से काम कर रही है। इस तरह लगभग 400 कृषि विज्ञानी किसानों के साथ काम कर रहे हैं। हमने आईएफसी वाशिंगटन के साथ भी करार किया है।

कंपनी की भविष्य की योजनाओं के बारे में बताइए?

हमरा एक उर्वरक संयंत्र है। लगभग 10-12 साल में हमने एक विपणन और वितरण नेटवर्क खड़ा किया है, जिसे हम कृषि समाधान यानी फार्म सोल्यूशन डिविजन प्रभाग कहते हैं। इसके अंतर्गत निर्धारित मूल्य के आधार पर उर्वरकों की खरीद-फरोख्त होती है। देखना यह है कि कौन सी नीति सामने आती है, उसी के आधार पर हम उर्वरकों का उत्पादन करेंगे। इस क्षेत्र में तेजी से बढ़ने के लिए हम अपने खेत समाधान विभाजन में अधिकाधिक किस्म के उर्वरक उपलब्ध कराना चाहते हैं। हम अपने कारोबार की इकाई को संपूर्ण भारत में विस्तार देने के बारे में सोच रहे हैं।

...पृष्ठ संख्या 18 का शेष

दिनों के बाद तरल खाद बनकर तैयार हो जाती है। एक हेक्टेयर खेत के लिए इस खाद में 40 से 45 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

हर्बल स्प्रे

एक घड़े में पानी लेकर उसमें नीम की पत्तियां, नीम के बीज, हल्दी एवं लहसुन आदि मिला देते हैं। कुछ दिनों के बाद इस हर्बल स्प्रे का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस स्प्रे का इस्तेमाल फसल में कीड़े आदि लगने पर उन्हें खत्म करने के लिए किया जा सकता है।

जैविक खाद के लाभ

जमीन में जीवाश्म की मात्रा बढ़ती है। जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। रासायनिक खाद के मुकाबले पोषक तत्व अधिक। जमीन का पीएच ठीक होता है। उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है। उपज का मूल्य अधिक मिलता है। अनाज स्वास्थ्यवर्द्धक और स्वादिष्ट होता है।

अंत में

हरित क्रांति के दौरान देश में फसल उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। तब अन्न की कमी से जूझ रहे देश में अन्न के विपुल भंडार भर गए। लेकिन अधिक उपज के साथ-साथ एवं सघन खेती अपनाने, रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण भूमि की उर्वरकता तथा कार्बनिक अंश में कमी आ गई। मिट्टी की संरचना व रासायनिक गुणों पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ा। परिणामतः आज फसल उत्पादकता में कमी महसूस की जा रही है। अतः हमें अपनी वर्तमान कृषि प्रणाली में फेरबदल की आवश्यकता समझी जाने लगी है। यह फेरबदल कृषि उत्पादकता को टिकाऊ खेती को व्यवस्थित किए जाने हेतु जरूरी है। टिकाऊ खेती की उवस्था उर्वरकों के समुचित प्रयोग के द्वारा ही की जा सकती है। इन उर्वरकों में रसायनिक उर्वरक भी आते हैं और जैविक उर्वरक भी। किसान उर्वरकों का उचित प्रयोग तभी कर सकते हैं, जब उन्हें इस बारे में सही ज्ञान मुहैया कराया जाए। किसान जागरूक होगा तो वह मृदा स्वास्थ के प्रति सजग रहेगा। स्वस्थ मृदा से स्वस्थ और भरपूर उपज और इस तरह स्वास्थ उत्तम तथा देश समृद्धशाली हो सकेगा।